बदलाव

घर के सारे काम निपटाते निपटाते शाम के चार बज गए थे। सर्दी की शुरुआत थी। मौसम में आया एक हल्का सा बदलाव तन और मन दोनों को सुखद लग रहा था। एक कप चाय ले कर पल्लवी अपनी छोटी सी बगिया में आ बैठी थी। पूरे दिन के बाद बस यही एक घंटा उसके हिस्से में में आता है,उसका अपना समय या आजकल की भाषा में कहें तो मी टाइम। अपनी मन पसंद कुर्सी पर बैठ कर,गर्म चाय की चुस्की लेकर चैन की सांस ली पल्लवी ने और लगी कोसने महामारी कोरोना को। "आग लगे इस कोरोना को, बीमारी के साथ साथ घर का काम भी चौगुना बढ़ गया है। कुछ महीने पहले बच्चों को स्कूल और पति को ऑफिस भेजने के बाद उसके पास 2-3 घंटे आराम के होते थे जिनमें वह दोस्तों से गपशप करती, अखबार,पत्रिकाओं में लेख और कहानियाँ पढ़ कर अपनी क्रिएटिव अर्ज को शांत करती थी, वहीं अब न वो अनमोल खाली समय है और न ही पत्रिकाएँ। ज़ाहिर है पत्रिकाएँ अब आ ही नहीं रहीं तो पढ़ी कैसे जाएंगी। इस मरे कोरोना की नज़र मेरे शोक़ को भी लग गयी है। यह तो खैरियत है कि अखबार आ रहा है। कम से कम दीन दुनिया की खबर तो मिल जाती है। वैसे तो समाचार टीवी या मोबाइल वगैरह से भी पता चल जाते हैं लेकिन जो मज़ा अखबार का है वो किसी और में कहाँ?

बचपन से उसे पढ़ने का बहुत शोक़ था,पुस्तकालय जाना, नई नई किताबेंऔर पत्रिकाएँ लाना, उन्हें पढना,शादी के बाद भी जारी रहा। कई अड़चनें आईं लेकिन उसका शोक़ लगातार बना रहा। इन किताबों,पत्रिकाओं के माध्यम से नई दुनिया से उसका परिचय होता रहा। लेकिन आज कल वह जैसे अपने अंदर एक खालीपन सा महसूस कर रही थी। अचानक बायीं तरफ रखा उसका मोबाइल बजने लगा, डिस्प्ले पर नाम उभरा लतिका,उसकी प्रिय सहेली का। दिल खुश हो गया। तुरंत फोन उठा कर पल्लवी ने लतिका को इतने दिनों तक फोन नहीं करने के लिए खूब खरी खोटी सुनाईलेकिन फिर जो बारें शुरू हुईं तो कॉलेज के दिनों की यादें ताज़ा हो गईं। बातों बातों में लकिता ने पल्लवी से पूछा,"अच्छा यह बताओ कितुम्हारा पढना लिखना कैसा चल रहा है?' पल्लवी की तो दुखती रग पर किसी ने हाथ रख दिया हो। "कहाँ,आजकल तो लगभग सब बंद हीहै,वही पुरानी पत्र पत्रिकाओं को दोहरा कर पढ़ लेती हूँ 'अच्छा यह बता अखबार लेती हो आजकल?लतिका ने पूछा। पल्लवी ने तुरंत जवाब दिया हाँ क्यों नहीं,हर रोज़ लेती हूँ। बस पढ़ने का समय बदल गया है। 'क्या कह रही हो?आजकल भी लेती हो?बड़ी हैरानी से लतिका ने कहा। पल्लवी ने जवाब दिया, अरे भाई मैं तो जब तक अखबार की हैड्लाइन्स से लेकर संपादकीय नहीं पढ़ लूँ चैन ही नहीं मिलता,तुम तो जानती हो यह बात। लोगों ने खूब समझाया मुझे किअखबार मत लो या पूरे अखबार को सैनिटाइज़ करो,धूप में रखो वगैरा। लेकिन कोई भी बात मुझे आश्वस्त नहीं कर पा रही थी। ऐसा नहीं कि मुझे डर नहीं था लेकिन बेवजह का डर मैं नहीं पालना चाहती थी। लिहाजा मैंने अखबार विक्रेता/ वेंडर आनंद जी से बात की। उन्होंने बताया कि अखबार का छपना पूरी तरह से मशीनी प्रक्रिया है इसलिए उसका संक्रमित होना मुश्किल है, और बड़े बड़े डिसट्रिबूटोरअपने अपने स्तर पर अखबार सैनिटाइज़ भी करते हैं। इसके अलावा अखबार बांटने की पूरी ज़िम्मेदारी आज कल आनंदजी और उनके पुत्र अतुल ही उठा रहे हैं तो उनको अपना खयाल रखना ही होगा । आनंदजी ने मुझे बताया किउन दोनों ने कोरोना टेस्ट भी कराया था जो निगेटिव निकला। तो उनकी बातों से आश्वस्त हो कर मैंने अखबार लेना जारी रखा। लेकिन लतिका तुम यह क्यों पूछ रही हो?पल्लवी ने पूछा, क्या तुम अखबार नहीं ले रही हो?लतिका ने कहा, हाँ। खैर बातों में समय कैसा बीत गया पता नहीं चला। लतिका के फोन रखने के बाद पल्लवी गहरी सोच में डूब गयी;क्या इस महामारी के डर से लोग आपसी रिश्तों

को भूलने लगे हैं?आनंदजी जैसे न जाने कितने लोगों कीरोज़ी रोटी खतरे में पड़ गयी होगी, क्या हम इनके लिए कुछ नहीं कर सकते?हमारे नज़रिये मेंआया एक छोटा सा बदलाव भी चमत्कार कर सकता है। यह ठीक है कि हमारी सुरक्षा हमारी प्राथमिकता है लेकिन समाज के प्रति भी तो हमारा कोई इस कर्तव्य है। हमसे जुड़े जो लोग हैं, क्या उनकी और उनके परिवार के प्रति हमारी कोई ज़िम्मेदारी नहीं?आनंद जी के परिवार में उनकी पत्नी,पुत्र के अलावा एक छोटी बेटी भी तो है,जो कक्षा 8 की छात्रा है और उनका पुत्र 12वीं के बाद बी एस सी में पढ़ रहा है और पिता का हाथ भी बंटाता है। अगर आनंद जी का काम नहीं चला तो इन बच्चों की पढ़ाई, इनके भविष्य का क्या होगा?

ठीक है कि अखबार पढना मेरी दिनचर्या का एक ज़रूरी हिस्सा है,लेकिन इसी बहाने मुझे एक मौक़ा मिल गया अपने एक प्रयास से आनंद जी के चेहरे पर मुस्कुराहट लाने का। वैश्विक महामारी के इस दौर में जीवन कहीं थम जाए ऐसा बिलकुल नहीं होने देना है। आखिर इसी समय में तो मेरे और आनंद जी के बीच स्याही और कागज़ के संबंध के अलावा एक और संबंध बन गया था-समझदारी,मानवीय समवेदनाओं,और आपसी विश्वास का संबंध। अपने निर्णय से संतुष्ट, पल्लवी के चेहरे पर मुस्कान थी, और उसकी उँगलियाँ मोबाइल पर लतिका का नंबर मिलाने लगी,उसे अपनी दोस्त के नज़रिये में बदलाव लाने में कामयाब होना ही था। उसे यकीन था कि लतिका को अगर उसकी ज़िम्मेदारी का एहसास कराया जाएगा तो वो ज़रूर समझेगी।बूंद बूंद से घड़ा भरता है यह बात सबको समझ में आती है,लतिका भी समझेगी। इस विपत्ति के में वो पूरी कोशिश करेगी कि आनंद जी के बच्चों की शिक्षा होती रहे

POONAM KUDAISYA

संस्कृति कर्मी

Answers for Riddles from Page 08:

1. A clock 2. Your name 3. Kate